UNIT - 1

निर्देशन तथा परामर्श

(1)

Q. निर्देशन के स्वरूप एवं विशेषताओं का वर्णन कीजिए

Ans. निर्देशन का अर्थ :-

निर्देशन का अर्थ है - पथ प्रदर्शन करना, या संकेत करना। यह एक व्यक्तिगत कार्य है, जो किसी व्यक्ति को उसकी समस्याओं के समाधान के लिए दिया जाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अनुभवी व्यक्ति अनुभवहीन व्यक्ति को निर्देशित करता है अर्थात किसी व्यक्ति की रुचि, योग्यता व क्षमता को ध्यान में रखते हुए उसके आधार पर पथ - प्रदर्शन करना ही निर्देशन कहलाता है।

निर्देशन की परिभाषा :-

निर्देशन एक प्रक्रिया है जिसके अनुसार एक व्यक्ति को सहायता प्रदान की जाती है जिससे कि वह अपनी समस्या को समझते हुए आवश्यक निर्णय ले सके और निष्कर्ष निकालते हुए अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। यह प्रक्रिया व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व, क्षमता, योग्यता तथा मानसिक स्तर का ज्ञान प्राप्त कराती है यह व्यक्ति को उसकी समस्या को समझने योग्य बनाती है। यह व्यक्ति को मुख्यतः उन उपायों का ज्ञान कराती है जिनके माध्यम से उसे अपनी प्राकृतिक शक्तियों का बोध होता है और ऐसा होने पर उसका जीवन व्यक्तिगत व सामाजिक स्तर पर अधिकतम हितकार होता है।

निर्देशन के विषय में विभिन्न शिक्षा - शास्त्रियों की परिभाषाएँ :-

जोन्स के अनुसार :-

"निर्देशन किसी के द्वारा दी जाने वाली व्यक्तिगत सहायता है जो व्यक्ति को दिशा चुनने और जीवन की समस्याओं का समाधान करने में सहायता करती है।"

हमरिन के अनुसार :-

"निर्देशन व्यक्ति को भावी जीवन के लिए तैयार करता है तथा समाज के साथ समायोजन करने में सहायता करता है।"

कुप्पूस्वामी के अनुसार :-

"निर्देशन व्यक्ति को अपने समायोजन की समस्याओं में सहायता देने की प्रक्रिया है।"

जेम्स के अनुसार :-

"निर्देशन का केन्द्र बिन्दु व्यक्ति है न कि उसकी समस्याएँ। निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति का अपनी दिशा में विकास है।"

निर्देशन की विशेषताएँ

(1) निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया।
(2) सन्तुलित विकास।
(3) विकास की प्रक्रिया।
(4) स्वयं निर्णय लेने में सक्षम।
(5) जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सहायक।
(6) योग्यताओं व क्षमताओं के अनुकूल।
(7) शिक्षण क्रिया को पूर्ण बनाने में सहायक।
(8) कौशलों को संरक्षित करने में सहायक।
(9) क्षमता विकास में सहायक।
(10) समस्या समाधान में भी सहायक।
(11) व्यक्तिगत प्रक्रिया।
(12) समायोजन में सहायक।
(13) दृष्टिकोणों को विकसित करने में सहायक।
(14) सामाजिक जीवन को उपयोगी बनाने में सहायक।
(15) जटिल प्रक्रिया।
(16) निर्देशन एक सेवा है।
(17) व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर आधारित।
(18) सर्वोन्मुखी विकास में सहायक।
(19) शैक्षिक सेवा।
(20) व्यक्ति केन्द्रित।

Scanned with CamScanner

UNIT - 1
Guidance & counselling

प्र१. निर्देशन के महत्वपूर्ण उद्देश्य कौन- कौन से है?

उत्तर - निर्देशन व्यापक एवं संकुचित दोनो ही अर्थो मे एक प्रकार की सेवा है जिसका उद्देश्य व्यक्ति एवं उसके सामाजिक सन्दर्भो की गुणवत्ता, समरसता, एवं परस्पर तालमेल को सुधारना है। वास्तव में शिक्षा तथा निर्देशन के उद्देश्य एक जैसे ही है। क्योकि दोनो ही व्यक्ति के विकास से संबन्धित है।

इसके निम्न उद्देश्य होते है :—

(a) <u>व्यक्तिगत उद्देश्य</u> :—

1. आत्म विवेचन बढ़ाना।
2. व्यक्तिगत विकास।
3. व्यक्तित्व के सकारात्मक व नकारात्मक पक्षो को स्वयं समझने की क्षमता विकसित।
4. आवश्यकताओ की उचित समझ।
5. क्षमताओ को विकसित।
6. रुचियो को विकसित।
7. आत्मविकास मे वृद्धि।
8. सभी पक्षो का विकास।
9. समस्या समाधान मे सहायक।
10. योग्यता के अनुकूल निर्देशन।
11. समायोजन मे सहायक।
12. सामाजिक तनाव मे कमी।

(b) <u>व्यवसाय संबंधी उद्देश्य</u> :—

1. व्यवसायो के प्रति उचित समझ विकसित।
2. उचित व्यवसाय चयनित करने मे सहयोग।
3. विभिन्न व्यवसायो के निरीक्षण की सुविधा।
4. विभिन्न व्यवसायिक अवसरो की जानकारी।
5. कार्य के प्रति आदर्श भावना जागृत।
6. व्यवसाय संबंधी सूचनाओ का विश्लेषण करने की क्षमता का विकास।

Scanned with CamScanner

7. व्यवसाय व व्यक्ति के मध्य सामंजस्य।
8. व्यवसायिक क्षमता का विकास।
9. व्यवसायिक अभिरुचि का विश्लेषण।
10. व्यवसायिक रुचि का मापन।

(3) समाज से संबंधित उद्देश्य :-

1. समाज कल्याण मुख्य उद्देश्य।
2. समाज को तनावमुक्त पीढ़ी प्रदान।
3. समाज की आवश्यकताओं के प्रति उचित समझ।
4. समस्याओं का ज्ञान।
5. समाज के विकास हेतु सहयोग।
6. समाज के विविध क्षेत्रों में योग्य व्यक्तियों को उपर्युक्त स्थान दिलाना।
7. सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति।
8. सामाजिक समायोजन में सहायक।
9. सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन।
10. बदलती हुई परिस्थितियों में सहायक।

(4) शिक्षा संबंधी उद्देश्य :-

1. पूर्व प्राथमिक स्तर पर।
   (a) आदतों के विकास में सहायक।
   (b) भावात्मक नियंत्रण।
   (c) वातावरण को जानने कुशलता विकसित
   (d) अभिव्यक्ति की क्षमता।
   (e) सृजनात्मकता विकसित।
   (f) आत्मअनुशासन विकसित।
   (g) सामाजिकता की भावना विकसित।
   (h) भावनात्मक सन्तुलन विकसित।
   (i) रुचि जागृत।

Scanned with CamScanner

2. माध्यमिक स्तर पर :-

(a) विचारों को प्रकट करने के अवसर।
(b) भावनात्मक नियन्त्रण क्षमता।
(c) योग्यतानुसार विषय चयन में सहायक।
(d) रुचि अनुसार व्यवसायिक " " " ।
(e) मानसिक स्थिरता विकासित।
(f) विचारों पर नियन्त्रण।

3. हाई स्कूल स्तर पर :-

(a) अच्छा नागरिक बनने में सहयोग।
(b) स्वतन्त्र निर्णय।
(c) व्यवसाय के प्रति उचित समझ विकसित।
(d) उचित पाठ्यक्रम चयन में सहयोग।
(e) स्वतन्त्र कार्य करने की क्षमता।
(f) तर्क विकासित।

4. उच्च शिक्षा स्तर पर :-

(a) पाठ्यक्रम संबंधी समस्याओं का निदान।
(b) व्यवसाय खोजने में सहायक।
(c) आर्थिक समस्याओं को दूर करने में सहायक।
(d) दैनिक जीवन तनावमुक्त।
(e) विषय चयन संबंधी समस्याओं का निदान।

Scanned with CamScanner

Q. निर्देशन सेवाओं के संगठन से आप क्या समझते है। प्रत्येक का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

उत्तर. निर्देशन सेवाओं के संगठन का अर्थ :-

निर्देशन कार्य को विद्यालयों में सफलतापूर्वक चलाने के लिए यह भी आवश्यक है कि यह संगठित तथा व्यवस्थित रूप मे हो। निर्देशन मे छात्र विद्यालय में जिन कठिनाइयों एवं समस्याओं का अनुभव करता है, उसकी शैक्षिक प्रगति में आन्तरिक तथा बाह्य बाधाएँ प्रभावित करती है। उनके समुचित निराकरण के लिए निर्देशन सेवाओं का आयोजन विद्यालयों में किया जाना चाहिए। शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना होता है और यह उद्देश्य निर्देशन सेवाओं की समुचित व्यवस्था के बिना नहीं किया जा सकता।

निर्देशन कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित निर्देशन सेवाएँ आती है :-

(1) सूचना सेवा (Information service) :-

"सूचनाओं" का समस्त प्रकार के निर्देशनों मे विशिष्ट महत्व है। सूचनाओं की जानकारी छात्र एवं निर्देशन प्रदाताओं दोनो के लिए आवश्यक है। वैयक्तिक निर्देशन के लिए व्यक्ति की पारिवारिक तथा सामाजिक परिस्थितियों तथा उसकी विशेषताओं से संबंधित सूचनाएँ आवश्यक होती है।

(2) परामर्श सेवा (Counselling service) :-

परामर्श का आशय परामर्श के अन्तर्गत, पारस्परिक संबंध को विशेष महत्व दिया जाता है। इस प्रक्रिया मे एक सहायता प्राप्त करने वाला सेवार्थी होता है तथा दूसरा सहायता प्रदान करने वाला प्रशिक्षित व्यक्ति। परामर्श का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की वैयक्तिक

Scanned with CamScanner

रूप से सहायता करना है। परामर्श के अन्तर्गत परामर्शदाता की दी गयी सलाह अथवा सुझाव को दूसरे व्यक्ति अर्थात् सेवार्थी पर थोपा नहीं जाता, वरन् यह प्रयास किया जाता है कि छात्र ही अपने व्यावसायिक एवं शैक्षिक अवसरों के सम्बन्ध में विचारणीय एवं महत्वपूर्ण तथ्यों को संकलित एवं व्यवस्थित करे तथा स्वयं की योजनाओं के सन्दर्भ में उनका मूल्यांकन कर, सही निर्णय ले।

(3) आत्म अनुसूची सेवा :-

व्यक्ति में आत्मबोध की क्षमता का विकास करने की दृष्टि से आत्म अनुसूची सेवा का विशेष महत्व होता है। इस सेवा के आधार पर व्यक्ति को आन्तरिक विशेषताओं के सम्बन्ध में वस्तुनिष्ठ जानकारी प्रदान की जाती है। इस सेवा के आधार पर सेवार्थी को स्वयं में निहित योग्यताओं, क्षमताओं एवं भावी सम्भावनाओं की जानकारी प्राप्त होती है।

(4) व्यक्तिगत प्रदत्त संकलन सेवा :-

शैक्षिक, व्यावसायिक अथवा व्यक्तिगत निर्देशन हेतु विभिन्न प्रकार की आधार सामग्री को प्रयुक्त किया जाता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण, मूल्यांकन की आत्मनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ विधियां, इस आधार सामग्री को उपलब्ध कराने में सर्वाधिक सहायक होती है। इस आधार सामग्री का संकलन अथवा उसे व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना उल्लेखनीय महत्व रखती है, क्योंकि इस सामग्री के वस्तुनिष्ठ एवं समुचित प्रयोग पर ही किसी भी प्रकार के निर्देशन की वस्तुनिष्ठता अथवा प्रभावशीलता आधारित होती है।

व्यक्तिगत आधार सामग्री संकलन सेवा के अन्तर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों से संबंधित सूचनाएँ आवश्यक है:-

1. सामान्य सूचनाएँ

Scanned with CamScanner

2. पारिवारिक तथा सामाजिक वातावरण।
3. शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य
4. उपलब्धि संबंधित सामग्री
5. अभियोग्यता, रुचियाँ तथा व्यक्तिगत समायोजन से संबंधित

(5) पूर्व सेवाएं :-

व्यावसायिक निर्देशन के अन्तर्गत, इस सेवा का विशेष रूप से उपयोग किया जाता है। पूर्व सेवा विद्यालय अथवा शैक्षिक संस्था के कार्य जगत में जाने की तैयारी से संबंध है। इस प्रकार की शिक्षा को विशिष्ट रूप से अमेरिका के माध्यमिक विद्यालयों मे प्रयुक्त किया गया है।

(6) राज्य और केन्द्रीय स्तर पर निर्देशन सेवाएं :-

अधिकतर देशो मे निर्देशन आन्दोलन अभी हुआ है। भारत मे तो निर्देशन आन्दोलन अपनी शैशवावस्था में चल ही रहा है। माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियो की बढती हुई संख्या से निर्देशन सेवाओ को मान्यता मिलने लगी है ताकि विद्यार्थियों को उनके पाठ्यक्रमो तथा भविष्य के कार्यक्रमो तथा व्यवसाय के चयन मे उनकी सहायता की जा सके।

(7) व्यवसायिक सूचना सेवा :-

व्यवसायिक सेवा एक स्वतंत्र सेवा है जो देश भर मे पेश की जाती है और किशोरो के लिए एक जीवन परियोजना के निर्माण को बढ़ावा देने की मांग करती है। इस सेवा का संबंध छात्रो को व्यवसाय से संबंधित विभिन्न प्रकार की जानकारी, उन्नति के अवसर, सामाजिक, आर्थिक जानकारी आदि के बारे मे सूचना देना होता है।

छात्र को व्यवसाय संबंधित विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ निम्नलिखित साधनो के द्वारा दी जाती हैं :-

1. पुस्तको के माध्यम से।

२. उद्योग के भ्रमण के माध्यम से,
३. रोजगार कान्फ्रेंस के माध्यम से।

(४) व्यावसायिक तैयारी सेवा :-

व्यावसायिक तैयारी सेवा से तात्पर्य उस सेवा से है जो व्यक्ति को नौकरी या किसी भी व्यवसाय से पहले प्रशिक्षण दिया जाता है। व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति को इस प्रकार की तैयारी में सहायता करती है। व्यक्ति की व्यवसाय में सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि प्रशिक्षण के दौरान उसने कितना सीखा।

(१) नौकरी से पहले का प्रशिक्षण :-
बी.एड, आई.टी.आई आदि कोर्स।

(२) प्रशिक्षुता :-
इस प्रशिक्षण से व्यक्ति वास्तविक रूप से किसी कारखाने, अस्पताल आदि में व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु कार्य करता है।

(३) नौकरी के दौरान प्रशिक्षण :-
इस प्रकार का प्रशिक्षण एक व्यवसाय को सामान्य रूप से ग्रहण करने के पश्चात उसमें विशिष्टता प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

(५) अनुवर्ती सेवा :-

अनुवर्ती सेवा निर्देशन कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसके बिना निर्देशन कार्यक्रम पूर्ण नहीं हो सकता है। निर्देशन कार्यकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह व्यक्ति की सहायता केवल व्यवसाय चुनने, उसके लिए तैयारी करने तथा उसमें प्रविष्ट होने मात्र में ही न करे, बल्कि उसे व्यवसाय

Scanned with CamScanner

में उसकी उचित उन्नति तथा उसके साथ समायोजन करने में भी उसकी सहायता करे।

अनुवर्तन की कुछ विधियाँ :-

1. विद्यालय के छात्रों का सर्वेक्षण।
2. विद्यालय छोड़कर जा चुके छात्रों का सर्वेक्षण।
3. कार्यशालाओं का प्रबन्ध।
4. समूह सम्मेलन का प्रबन्ध।

(10) अनुसंधान सेवा :- निर्देशन सेवा में अनुसंधान का विशेष महत्व है। निर्देशन सेवाओं में जब तक विभिन्न प्रकार का अनुसन्धान अध्ययन न किया जाए तब तक वे प्रभावशाली ढंग से विकसित नहीं हो सकती हैं। अनुसन्धान में शैक्षिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत निर्देशन से संबंधित विभिन्न प्रकार का अध्ययन एवं खोजें सम्मिलित हैं, अनुसंधान के अन्तर्गत निर्देशन कार्यकर्ता की योग्यताओं, कुशलताओं और अनुभवों का उचित प्रयोग किया जाता है।

अनुसंधान सेवा का महत्व :-

1. निर्देशन कार्यक्रमों में निरन्तर सुधार।
2. व्यावसायिक विकास को उन्नतशील।
3. व्यावसायिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने में सहयोगी।
4. निर्देशन कार्यकर्ता को निरीक्षण करने और अनुमान लगाने में सहायता करना।
5. परिस्थितियों से समायोजन करने में सहायक।

Scanned with CamScanner

(11) नियुक्ति सेवा :-

नियुक्ति सेवा छात्र को उसकी योग्यता, कुशलता तथा रुचि के अनुसार उचित नौकरी दिलाने मे सहायता करती है। जिससे वह सफलतापूर्वक नौकरी मे समायोजन स्थापित कर सके। अतः नियुक्ति सेवा शैक्षिक सेवा का वह भाग है जो विद्यार्थियो को अपनी शैक्षिक एवं व्यवसायिक योजनाओ को पूरा करने मे सहायता देती है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप मे हम कह सकते है कि इन समस्त सेवाओ का उद्देश्य यद्यपि पृथक - पृथक है परन्तु फिर भी निर्देशन प्रदान करने की दृष्टि से इनका समन्वित महत्व है। विशेषकर भारतीय परिस्थितियो के सन्दर्भ मे इन सेवाओ के समन्वय की अधिक आवश्यकता है। इसके साथ ही इनके समुचित बोध, विकास एवं उपयोग की भी समान रूप से आवश्यकता है।

(1)

प्र. शैक्षिक निर्देशन के प्रमुख सिद्धान्त तथा विधियों का वर्णन कीजिए।

उ. शैक्षिक निर्देशन :-

शिक्षा निर्देशन वह व्यक्तिगत सहायता है जो छात्रों को इसलिए प्रदान की जाती है कि वे अपने लिए उपयुक्त विद्यालय पाठ्यक्रम, पाठ्य-विषय तथा पाठ्यातिरिक्त क्रियाओं का चयन कर सके तथा उनमें समायोजित कर सके। शैक्षिक निर्देशन अंग्रेजी शब्द educational guidance का हिन्दी रुपान्तरण है जिसका अर्थ होता है मार्ग दिखाना या मार्गदर्शन। इस प्रकार मार्गदर्शन एक व्यक्ति द्वारा किसी व्यक्ति को सहायता या परामर्श प्रदान करने की प्रक्रिया का नाम है। शैक्षिक निर्देशन का अर्थ है शिक्षा के क्षेत्र मे मार्गदर्शन करना।

प्रत्येक विद्यार्थी की रुचियां, अभिक्षमताएं व योग्यताएं एक की अपेक्षा दूसरे से भिन्न होती है। किसी में अधिक बुद्धि होती है तो किसी मे कम। वर्तमान समय मे विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं, बौद्धिक क्षमताओं, रुचियों, अभिरुचियों व व्यक्तिगत शीलगुणों से अवगत कराने के लिए शैक्षिक निर्देशन अत्यन्त आवश्यक है।

परिभाषाएं :-

मायर्स के अनुसार :-

"शैक्षिक निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक ओर तो विशिष्ट गुण वाले छात्रों मे और दूसरी ओर अवसरों और आवश्यकताओं के विभिन्न समूहों में संबंध स्थापित करती है।"

जोन्स के अनुसार :-

"शैक्षिक निर्देशन का संबंध विद्यालय, पाठ्यक्रम, पाठ्य विषय और विद्यालय जीवन के चयन तथा अनुकूलन हेतु छात्रों को दी जाने वाली सहायता से है।"

Scanned with CamScanner

शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक प्रगति तथा मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों के फलस्वरूप, शैक्षिक जगत में अनेक नवीन परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए हैं। शिक्षा के उद्देश्यों शिक्षण अधिगम की व्यवस्था तथा अनुदेशन की प्रक्रिया में इन परिवर्तनों को प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है। विद्यार्थियों की ~~समस्याओं~~ समस्याओं के समाधान के लिए शैक्षिक निर्देशन का उपयोग आवश्यक है।

(1) पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों का चयन।
(2) अग्रिम शिक्षा के संबंध में जानकारी।
(3) नवीन विद्यालयों में समायोजन की दृष्टि से।
(4) विभिन्न अवसरों की जानकारी प्रदान करना।
(5) अपव्यय की समस्या का समाधान।
(6) अधिगम की दिशा में तत्परता बनाए रखने हेतु।
(7) व्यवसायों का ज्ञान देना।
(8) विद्यालय व्यवस्था में परिवर्तन।
(9) स्कूल में संतोषजनक प्रगति।
(10) छात्रों की विविध योग्यताओं से परिचय।
(11) अवरोधन को दूर करने के लिए। segregation
(12) अनुशासनहीनता नियन्त्रित करने के लिए।
(13) पिछड़े बालकों की समस्या दूर।
(14) बाल-अपराधियों की बढ़ती संख्या के कारण।
(15) विद्यार्थियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि।
(16) असन्तोषजनक प्रगति
(17) अवांछित व्यवहार में सुधार।
(18) व्यक्तिगत विभिन्नताएँ।
(19) पाठ्य सहायक क्रियाओं को संगठित करना।
(20) विद्यार्थियों की विशेष समस्याओं का समाधान।

Scanned with CamScanner

शैक्षिक निर्देशन के उद्देश्य

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है। इसके माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि सभी बालक, सभी दृष्टिकोण से समान नहीं होते, उनमें विभिन्नताएं पायी जाती है। इसी कारण आज शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता को अधिक अनुभव किया जा रहा है। शैक्षिक निर्देशन के निम्नलिखित उद्देश्य प्रतिपादित किए गए है।—

१) उचित प्रगति में सहायक।
२) योग्यता, रुचि अनुसार पाठ्यक्रम चयन।
३) आत्म अनुदेशन की ओर अग्रसरित।
४) शैक्षिक संभावनाओं का पता लगाने में सहायक।
५) प्रशासनिक क्रियाओं में परिवर्तनों का सुझाव।
६) वर्तमान शिक्षा स्तर को ध्यान में रखते हुए सहायता।
७) शैक्षिक क्षेत्र में वांछित प्रगति।
८) अनेक प्रकार की शिक्षा व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी प्रदान।
९) विवेकपूर्ण योजना बनाने में सहायक।
१०) उपयुक्त शैक्षिक दृष्टिकोण विकसित।
११) समाज में असमायोजित बालकों की उचित आवश्यकताओं पर ध्यान।
१२) सामाजिक और नैतिक मूल्यों का विकास।
१३) सर्वांगीण विकास में सहायक।
१४) शिक्षा से अधिक से अधिक लाभ उठाने में बच्चों की सहायता।
१५) अनेक प्रकार की शिक्षा व्यवस्थाओं के संबंध में बच्चों को जानकारी प्रदान करना।

Scanned with CamScanner

शैक्षिक निर्देशन के सिद्धान्त:

शैक्षिक निर्देशन विवेकपूर्ण प्रयास है जिससे छात्रो के मानसिक एवं बौद्धिक विकास मे सहायता की जाती है। वह सभी अनुदेशन, शिक्षण तथा अधिगम की वे क्रियाएं जो छात्र के विकास मे सहायक होती है शैक्षिक निर्देशन का अंग होती है।

मनोवैज्ञानिको तथा विद्वानो ने शैक्षिक निर्देशन के कुछ प्रमुख सिद्धान्त निर्धारित किए है- जो निम्नलिखित है:-

(1) निर्देशन सभी छात्रो को उपलब्ध होना चाहिए:-

निर्देशन समस्त छात्रो को उपलब्ध होना चाहिए निर्देशन सेवाए केवल चयनित विद्यार्थियो को ही प्रदान नही करना चाहिए, वरन ये सेवाए समस्त छात्रो को उपलब्ध होनी चाहिए, तभी निर्देशन प्रदाता अपने उद्देश्यो मे सफल हो सकता है। निर्देशन प्रदाता की यही सफल कोशिश होनी चाहिए कि कोई भी छात्र निर्देशन सेवाओ से वंचित ना रहे।

(2) समस्या का समाधान प्रारम्भ मे ही होना चाहिए:-

यदि किसी विद्यार्थी की, निर्देशन से संबंध कोई समस्या उत्पन्न होती है, तो उसकी समस्या का समाधान तत्काल ही कर देना चाहिए, जिससे समस्या का रूप गम्भीर न हो सके।

(3) प्रमापीकृत परीक्षाओ का प्रयोग होना चाहिए:-

विद्यार्थियो द्वारा, विद्यालय मे प्रवेश लेने पर, उन पर प्रमापीकृत परीक्षाओ का प्रशासन किया जाए। इन प्रमापीकृत परीक्षाओ के प्राप्त परिणामो के आधार पर, विद्यार्थी की किस पाठ्यक्रम मे सफलता के बारे में भविष्यवाणी की जा सकेगी। इसके अतिरिक्त आने

Scanned with CamScanner

वाले समयो पर भी यदि इन परीक्षाओ का प्रयोग किया जाए तो उत्तम होगा।

(५) समुचित एवं संबंधित सूचनाओ का संकलन किया जाए :-

पर्याप्त मात्रा में समुचित तथा संबंधित सूचनाओ के संकलन के अभाव मे, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करना असंभव है। सफल निर्देशन प्रदान करने के लिए पर्याप्त सूचनाओ को संकलित करना आवश्यक है,

(6) छात्र का निरन्तर अध्ययन :-

इस बात की जाचँ करने के लिए कि निर्देशन कहाँ तक सफल हुआ है? विद्यार्थी का व्यवसाय में लग जाने के उपरान्त भी उसका सतत् अध्ययन करना अधिक आवश्यक है। अपने व्यवसाय में विद्यार्थी ने सफलता प्राप्त की है अथवा नही। इन्ही बातो से निर्देशन की सफलता तथा असफलता का ज्ञान हो जाता है,

(6) विद्यालय एवं अभिभावको के मध्य गहन संबंध स्थापित करना :-

शैक्षिक निर्देशन का एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि विद्यार्थी के विद्यालय एवं अभिभावको के मध्य गहन संबंध स्थापित किया जाए।

(7) गोपनीयता का सिद्धान्त :-

निर्देशन प्रक्रिया मे प्रार्थी की समस्याओ की गोपनीयता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रार्थी से संबंधित कोई भी ऐसी सूचना किसी अन्य को न बतायी जाए जिससे कि वह स्वयं को अपने सहपाठियो से कमतर समझे।

Scanned with CamScanner

शैक्षिक निर्देशन की विधियाँ

1. व्यक्तिगत निर्देशन विधियाँ

(a) प्राथमिक साक्षात्कार
(b) विद्यार्थियों के संचित अभिलेख
(c) सामाजिक व आर्थिक अध्ययन
(d) मनोवैज्ञानिक परीक्षण
(e) प्रश्नावली
(f) बुद्धि व ज्ञानार्जन परीक्षाएँ

2. सामूहिक निर्देशन विधियाँ

(a) अनुस्थापन वार्ता
(b) पाश्र्वचित्र निर्माण
(c) विद्यालय से विद्यार्थियों के संबंध से सूचनाएं एकत्रित
(d) सम्मेलन
(e) परिवार से विद्यार्थियों के संबंध मे सूचनाएं एकत्रित
(f) रिपोर्ट तैयार करना
(g) अनुगामी कार्य
(h) साक्षात्कार

Scanned with CamScanner

शैक्षिक निर्देशन की विधियाँ

शैक्षिक निर्देशन की दो प्रमुख विधियाँ प्रचलित है:-

1. व्यक्तिगत निर्देशन
2. सामूहिक निर्देशन

व्यक्तिगत निर्देशन विधियो द्वारा निर्देशन व्यक्तीगत स्तर पर सम्पर्क स्थापित करके प्रदान किया जाता है। इसमे व्यक्ति की शारीरिक, मनासिक, सामाजिक, संवेगात्मक, बौद्धिक तथा वैयाक्तिक समस्याओ का अध्ययन किया जाता है। इसमे निम्नलिखित विधियो का अनुकरण किया जाता है:-

(1) प्राथमिक साक्षात्कार :→

विद्यार्थियो का व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करने के लिए प्राथमिक साक्षात्कार किया जाता है। इस प्राथमिक साक्षात्कार में निर्देशन समिति के लिए विद्यार्थियो से संबधित विभिन्न सूचनाएं एकत्रित करना आवश्यक है।

1. पारिवारिक वातावरण से संबधित
2. शिक्षा एवं व्यवसाय संबंधी योजनाओ के संबंध मे
3. अवकाश के समय मे की जाने वाली क्रियाओ के संबंध मे।

(2) विद्यार्थियो का संचित अभिलेख :→

शैक्षिक निर्देशन के लिए विद्यार्थियो से संबधित विभिन्न प्रकार की जानकारियो को एकत्रित किया जाता है तथा उन्हे रिकार्ड के रूप मे सुरक्षित रखा जाता है। यही संचित अभिलेख है। संचित अभिलेख मे निम्नलिखित सूचनाएं सम्मिलित की जाती है:-

1. छात्र का परिचय एवं विवरण

Scanned with CamScanner

2. छात्र का बौद्धिक स्तर संबंधी सूचनाएँ।
3. रुचियों एवं अभिरुचियों से संबंधी सूचनाएँ।
4. शारीरिक एवं स्वास्थ्य संबंधी सूचनाएँ।
5. मानसिक तथा उपलब्धि परीक्षण संबंधी जानकारी।
6. पारिवारिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।
7. पाठ्येतर क्रियाकलाप।
8. व्यक्तित्व संबंधी अन्य विशिष्ट जानकारियाँ।

(3) सामाजिक व आर्थिक अध्ययन :-

विद्यार्थियों के घर, परिवार, पास-पड़ोस इत्यादि के बारे में सामाजिक व आर्थिक जानकारियाँ प्राप्त कर लेनी चाहिए। इसके लिए प्रश्नावलियाँ तथा सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी का भी प्रयोग किया जाता है।

(4) मनोवैज्ञानिक परीक्षण :-

शैक्षिक निर्देशन के लिए विद्यार्थियों के विभिन्न व्यक्तित्व शीलगुणों के संबंध में जानने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है।
ये परीक्षण हो सकते हैं।—

1. बुद्धि परीक्षण
2. अभिरुचि परीक्षण
3. रुचि परिसूची
4. उपलब्धि परीक्षण
5. व्यक्तित्व परीक्षण
6. स्वास्थ्य परीक्षण

विद्यार्थियों के स्वास्थ्य का परीक्षण भी आवश्यक है। ऐसा माना जाता है कि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

(5) प्रश्नावली :-

इस विधी के अन्तर्गत एक प्रश्नावली तैयार की जाती है। प्रश्नावली प्रश्नो या कथनो का समूह है जिसके माध्यम से व्यक्ति से पृथकर सूचनाएँ एकत्रित की जाती है, प्रश्नावली का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के संबंध मे कुछ तथ्यो का पता लगाना तथा उसके विचार जानना है।

(6) बुद्धि तथा उपलब्धि परीक्षाएँ :-

इन परीक्षाओ का प्रयोग विद्यार्थी की योग्यताओ को जाचँने के लिए किया जाता है, बुद्धिमता कुछ नया सीखने या कौशल विकासित करने की क्षमता है, उपलब्धि (Achievement) एक अर्जित कौशल के आधार पर कुछ हासिल करने की क्षमता है, इन परीक्षाओ मे विद्यार्थी के ज्ञान तथा उपलब्धि को जाचँ जाता है कि विद्यार्थी ने भिन्न-भिन्न विषयो मे कितना ज्ञान अर्जित किया है।

Scanned with CamScanner

सामूहिक निर्देशन विधियां।

कभी - कभी ऐसी परिस्थितयां व कठिनाइयां उत्पन्न हो जाती है जब विद्यार्थियों को सामूहिक रूप से निर्देशन प्रदान किया जाता है। सामूहिक निर्देशन विधियां है:-

(1) अनुस्थापन वार्ता :-

निर्देशक व अन्य विद्वानो द्वारा विद्यार्थियो को सामूहिक रूप से शैक्षिक निर्देशन के महत्व को समझाया जाता है, उनकी शिक्षा संबंधी विभिन्न समस्याओं की विस्तृत चर्चा की जाती है जिससे विद्यार्थियो स्वयं अपनी समस्याओं के संबंध मे गहनता से सोचने के लिए प्रोत्साहित होते है।

(2) पार्श्वचित्र निर्माण :-

विद्यार्थियो से संबंधित समस्त सूचनाएं एकत्रित कर लेने के पश्चात एक पार्श्वचित्र तैयार कर लेना चाहिए। यह ग्राफ पेपर पर बना हुआ एक रेखाचित्र होता है जिसमें विद्यार्थियो की योग्यताओं, क्षमताओं तथा अन्य परीक्षणो के परिणामो के स्तर को प्रदर्शित किया जाता है। तत्पश्चात इस पार्श्वचित्र के आधार पर विद्यार्थियो से संबंधित सूचनाओ का निष्कर्ष निकाला जाता है।

(3) विद्यालय से विद्यार्थियो के संबंध मे सूचनाएं एकत्रित करना :-

शैक्षिक निर्देशन के लिए विद्यार्थियो के संबंध में सूचनाएं एकत्रित करने के लिए विद्यालय एक महत्वपूर्ण स्रोत है। विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धियों का ज्ञान उनके द्वारा विभिन्न परीक्षाओं मे प्राप्त अंको से हो जाता है अतः निर्देशन के लिए सूचनाएं एकत्रित करते समय विद्यालय एवं अध्यापक की सहायता अवश्य ली जानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

(5) सम्मेलन :→

विद्यार्थियों से संबन्धित विभिन्न प्रकार की सूचनाओं से प्राप्त निष्कर्षों को शैक्षिक निर्देशन समिति के समक्ष रखा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी - अपनी राय प्रस्तुत करता है तथा आपसी विचार - विमर्श के पश्चात एक सर्वमान्य निर्णय पर पहुंचते है। यह निर्णय निर्देशन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है तथा विद्यार्थियों के भविष्य को प्रभावित करता है।

(6) परिवार से विद्यार्थियों के संबन्ध में सूचनाएं एकत्रित करना :→

बच्चों की जीवन में सबसे अधिक निकटता परिवार में अपने माता - पिता से ही होती है। जन्म से माता - पिता अपनी आंखों के समक्ष उनको विकसित होते हुए देखते है तथा निरन्तर उनकी प्रगति के लिए सोचते रहते है। वे बच्चों की आदतों, रुचियों, अभिरुचियों व कठिनाइयों को बहुत अच्छी तरह से समझते है अतः बालकों की भावी शैक्षिक एवं व्यावसायिक योजनाओं के बारे में वे अच्छी तरह से बता सकते है। यह सूचनाएं घर जाकर, वार्ता द्वारा व पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क स्थापित करके प्राप्त की जा सकती है।

(7) रिपोर्ट तैयार करना :→

सम्मेलन में लिए गए निर्णय के आधार पर निर्देशन समिति प्रत्येक विद्यार्थियों के संबन्ध में विस्तृत रिपोर्ट तैयार करती है। यह रिपोर्ट विद्यार्थियों के माता - पिता, अभिभावक एवं विद्यालय अधिकारियों को दी जाती है जिससे वे विद्यार्थियों की कार्य योजना में सहायता कर सके।

Scanned with CamScanner

(7) अनुगामी कार्य :-

अनुवर्ती कार्य से तात्पर्य है जिन विद्यार्थियो को निर्देशित किया गया है उनका निरन्तर मूल्यांकन करते रहना, जिससे यह पता चल सके कि उन्हे जिस शिक्षा को ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था, उसमे वे सफलता प्राप्त कर रहे है या नही। यदि विद्यार्थियो की सफलता सन्तोषजनक नही है तो हमे यह समझना चाहिए कि हमारी निर्देशन पद्धति दोषपूर्ण है और उस कमी को जानकर दूर करने का प्रयास करना चाहिए। दूसरे शब्दो मे अनुवर्ती कार्य निर्देशन कार्यक्रम व्यवस्था को सुधारने एवं इसकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए अति आवश्यक है।

(8) साक्षात्कार :-

साक्षात्कार एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए आयोजित विचारो का आदान-प्रदान है। साक्षात्कार की तकनीक में साक्षात्कार लेने वाला तथा आवेदक आमने-सामने बैठकर मौखिक विचार-विमर्श करते है। साक्षात्कार का प्रयोग सामूहिक निर्देशन व व्यक्तिनिष्ठ निर्देशन मे भी किया जाता है, निर्देशन समिति साक्षात्कार द्वारा विद्यार्थियो के बारे मे सभी आवश्यक सूचनाएं एकत्रित करती है। साक्षात्कार के आधार पर व्यक्ति की योग्यताओ, गुणो, समस्याओ आदि के संबंध मे जानकारी प्राप्त की जाती है।

गुड तथा हाट के अनुसार :-

"किसी उद्देश्य हेतु किया गया गहन वार्तालाप ही साक्षात्कार है।"

Scanned with CamScanner